श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

प्रकास हिन्दुस्तानी–जंबूर

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर।। १ ।।

इस तरह से रास खेलने के बाद श्री राजजी और हम सब परमधाम गए। इच्छा पूरी नहीं हुई थी, इसलिए दुबारा खेल देखने की इच्छा लेकर आए।

उमेदां न हुइयां पूरन, धाख मन में रही।
तब धनीजीऐं अंतरगत, हुकम कियो सही।। २ ।।

हमारी चाहना पूरी नहीं हुई थी, इच्छा मन में रह गई थी। इसलिए धाम धनी ने हुकम करके यह ब्रह्माण्ड बनवाया।

तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत।
तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित।। ३ ।।

अब यह तीसरा खेल रच करके (बनाकर) श्यामाजी यहां आईं। तब हम भी लीला करने के वास्ते साथ में आए।

स्यामाजी को धनिऐं, आवेस अपनो दियो।
सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो।। ४ ।।

श्यामाजी को श्री राजजी महाराज ने अपना आवेश दिया और श्यामजी के मन्दिर में श्री देवचन्द्रजी को (न्यामत दी) घर की, बृज की तथा रास की पूरी हकीकत विस्तार से समझाई। खेल में सुन्दरसाथ आया हुआ है, उनको जगाकर घर वापस लाना है ऐसा हुकम श्री राजजी ने दिया।

इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में प्रणाम कर कहती हैं कि मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! सुनो, तुम जागो (अपने होश में आओ)। यह अवसर तुम्हारे हाथ आया है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५ ।।

साथ को सिखापन–राग धनाश्री

याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी।
आप डाऱ्या ज्यों पेहेले फेरे, भी डारियो निसंक फेर जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारे हाथ मौका आया है। अब तुम याद करो कि बृज में पहली बार हम आए थे और बृज को छोड़कर रास में बिना कोई देरी किए गए थे। इस बार भी वैसे ही माया को छोड़ देना।

Nijanand App